National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multidisciplinaryjournal.org
ISSN: 2455-9040
Received: 19-06-2024, Accepted: 13-07-2024, Published: 05-08-2024
Volume 9, Issue 3, 2024, Page No. 20-22

भारत–अमेरिका संबंधः प्रवासी भारतीयों का योगदान

पूजा सैनी
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, महारानी किशोरी जाट कन्या महाविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत

सारांश
भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच संबंध भारत की स्वतंत्रता हासिल करने से भी पहले से चली आ रहे है। वास्तव में संयुक्त राज्य अमेरिका न तो दोस्त है और न ही दुश्मन। दोनों देशों के बीच संबंधों में लगातार उतार–चढ़ाव आया है। दोनों लोकतांत्रिक देशों के बीच बढ़ते संबंधों को '21वीं सदी की एक परिभाषित साझेदारी' के रूप में देखा जा सकता है। यह साझेदारी अमेरिका में बढ़ती भारत की सॉफ्ट पावर के रूप में और भी मजबूत हो गई है। सॉफ्ट पावर किसी देश की आकर्षण और सहयोग के माध्यम से अंतराष्ट्रीय मुद्दों पर इच्छित परिणाम प्राप्त करने की क्षमता को दर्शाती है। सॉफ्ट पावर की मुद्रा सांस्कृतिक प्रभाव, राजनीतिक मूल्य और विदेश नीतियां हैं। भारत की सॉफ्ट पावर अमेरिकी धरती पर भारतीय प्रवासियों का बढ़ता प्रभाव है। प्रस्तुत शोध पत्र में भारत और अमेरिकी संबंधों में प्रवासी भारतीयों के योगदान पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है तथा साथ ही साथ यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि भारत की संस्कृति का प्रसार करने में तथा द्विपक्षीय संबंधो को आकार देने में भारतीय प्रवासियों की क्या भूमिका है।

मूल शब्दः सॉफ्ट पावर, द्विपक्षीय संबंध, विदेश नीति, अंतर्राष्ट्रीय मुद्दे, सांस्कृतिक प्रभाव

19वीं सदी के शुरुआती वर्षो में भारतीय संयुक्त राज्य अमेरिका में बस गये, हालांकि उस समय प्रवासियों की कम संख्या ने मेजबान देश पर ज्यादा प्रभाव नहीं डाला। विशेष रूप से 1960 के दशक के बाद, भारतीय प्रवासियों की एक नई लहर अस्तित्व में आई। अधिकांश प्रवासियों को डॉक्टर, इंजीनियर,शिक्षक आदि के रूप में शिक्षित और पेशेवर के रूप में देखा गया । संयुक्त राज्य अमेरिका में रहते भारतीयों को "भारतीय अमेरिकी" कहा जाता है। क्योंकि उनकी पैतृक जड़े भारत में अंतर्निहित है। 1980 में अमेरिकी जनगणना ब्यूरो ने स्वदेशी अमेरिकियों से पार्थक्य के लिए अन्य शब्द गढ़ा 'एशियाई भारतीय'। अमेरिका में उनका आगमन 1946 के लूसी–सेलर अधिनियम द्वारा चिह्नित हुआ, जिसने भारतीयों को यू.एस की धरती पर देशीकरण अधिकार प्रदान किया।

लगभग 4.4 मिलियन भारतीय अमेरिकी अमेरिका में रहते हैं, जो देश में तीसरा बड़ा एशियाई जाति समूह है। वर्तमान में, भारतीय प्रवासियों का एक बड़ा भाग युवा, उच्च शिक्षित और विज्ञान, प्रोद्यौगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एस.टी.ई.एम.) क्षेत्रों में प्रतिष्ठित है। भारतीय छात्र अमेरिकी विश्वविद्यालयों में नामांकित दूसरे सबसे बड़े अंतर्राष्ट्रीय छात्र समूह है। भारतीय आबादी व्यापक रूप से अमेरिका के सभी राज्यों में फैली है ।भारत की सॉफ्ट पावर का जरिया इसके प्रवासी है,जो इसकी संपत्ति है। जैसा कि जॉन अर्किला ने बिल्कुल सही कहा था कि वर्तमान के वैश्विक युग में विजय ज्यादातर इस बात पर निर्भर करती है कि किसकी कहानी जीतती है, न कि इस बात पर कि किसकी सेना जीतती है । इस दावे को 1990 में जोसेफ जी नी ने अपनी "बाउंड टू लीडः द चौलेंजिंग नेचर आफ अमेरिकन पावर" नामक किताब में "सॉफ्ट पावर" की अवधारणा के माध्यम से उद्धृत किया था। वर्तमान में भारत और अमेरिका के संबंधों में काफी घनिष्ठता आई है, चाहे वह रक्षा क्षेत्र हो या फिर व्यापार, शिक्षा या कूटनीतिक संबंध। हर क्षेत्र में भारत–अमेरिका करीब हुए है।इसका वैश्विक असर भी दिख रहा है। भारतीय मूल के प्रवासी वर्तमान में अमेरिका के अलग–अलग क्षेत्रों में झंडा गाड़ रहे हैं । आईटी के क्षेत्र में भी भारतीयों ने वहां अमूल्य योगदान दिया है। भारतीय लोगों की आबादी में भी वहां इजाफा हो रहा है।

संयुक्त राज्य में भारत के सॉफ्ट पावर पर प्रवासियों का प्रभाव

भारतीय प्रवासी भारत के सॉफ्ट पावर का स्त्रोत है। भारतीय प्रवासियों का अमेरिका में तीन चरणों में विकास हुआ है –

पहला, शिक्षा और रोजगार की तलाश, दूसरा प्रेषण का मुख्य स्त्रोत और तीसरा संयुक्त राज्य की गतिशीलता को प्रभावित करने वाले प्रभावी खिलाड़ियों के रूप में।

अमेरिका में भारतीय प्रवासी एक प्रभावी सार्वजनिक कूटनीति उपकरण है और अपने नैतिकता,अनुशासन, हस्तक्षेप न करने और स्थानीय लोगों के साथ शांतिपूर्ण जीवन बिताने के लिए जाने जाते है। ये मूल्य संयुक्त राज्य में भारतीयों की पहचान बनाने में योगदान करते है।

सॉफ्ट पावर से पॉलिटिकल पावर तक का सफर

प्रवासी भारतीयों ने अपनी सॉफ्ट पावर को ही ताकत बनाया। वक्त गुजरने के साथ वो इकोनॉमिक,एजुकेशनल और बाद में पॉलिटिकल पावर बनते गए। भारतीय प्रवासी भारत के सॉफ्ट पावर के न केवल स्त्रोत है, बल्कि उसके अभिकर्ता भी है जैसा कि नीचे वर्णित किया गया है-

संस्कृति

आज अमेरिका में हिंदी समेत कई भारतीय भाषाओं के एफएम रेडियो स्टेशन उपलब्ध है। जैसे कि आर.बी.सी. रेडियो, इजी 96 रेडियो, देशी जंक्शन,रेडियो सलाम नमस्ते,रेडियो हमसफर, फनएशिया रेडियो और संगीत। भारतीय टीवी चौनल जैसे कि सोनी टीवी, जी टीवी, स्टार प्लस, कलर्स और क्षेत्रीय चैनल भी प्रसारित होते है। प्रियंका चोपड़ा, फ्रीडा पिंटो और मीरा नायर बॉलीवुड के साथ हॉलीवुड के भी कामयाब नाम है। मेट्रोपोलिटन जिलों की सिनेमाघरों में भी बॉलीवुड फिल्में दिखाई जाती है। अधिकांश भारतीय त्योहार उसी उत्साह और जोश के साथ मनाए जाते हैं। विशेष रूप से व्हाइट हाउस में दीवाली का त्योहार मनाया जाता है। भारतीय अमेरिकियों की समृद्ध सभ्यता और सांस्कृतिक लोकाचार अमेरिकी ढांचे का हिस्सा बन गए है। भारत की संस्कृति के प्रसार में प्रवासी भारतीयों की भूमिका राष्ट्रीय ब्रांडिंग में भी योगदान दे रही है।

धार्मिक

हिन्दुओं के अलावा दूसरे मजहबों के लोग सामाजिक सहायता का काम करते है। भारत के हिन्दू, सिक्ख, जैन, मुस्लिम और इसाई समुदायों ने संयुक्त राज्य अमेरिका में दृढ़ता के साथ अपने धर्म को स्थापित किया है। हिन्दू भारतीयों ने अमेरिका में हिंदू अमेरिकन फाउंडेशन का गठन किया है। भारतीय धार्मिक समुदाय जब भी अमेरिका में आवश्यकता पड़ती है, दान कार्य में सहायता करते है। इसके अलावा खालसा फूड पेंट्री और खालसा पीस कॉप्स जैसे संगठन भी एक्टिव है,जो नियमित रूप से अमेरिका में रहने वाले कम आय वाले परिवारों को सहायता प्रदान करते है। 'द सिक्खेस' संगठन भोजन और कपड़ो के रूप में और सार्वजनिक सेवा के अवसर प्रदान करके सहायता प्रदान करता है।

शिक्षा

भारतीय प्रवासियों ने उच्च शिक्षा प्राप्त की है। 2018 में आई एक रिपोर्ट में कहा गया था कि अमेरिकी लोगों से तीन गुना ज्यादा भारतीयों के पास पी.एचडी और दूसरी मास्टर्स डिग्री है। दूसरे शब्दों में कहें तो भारतीय शिक्षा के मामले में बहुत आगे है। इस सेक्टर में योग और आर्युवेद को अहम पायदान पर रख सकते है। भारतीय प्रवासी विज्ञान, प्रोद्यौगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एस.टी.ई.एम.) क्षेत्रों में काम करके अन्य नागरिकों को पछाड़ते है।

आय

अमेरिका में प्रवासी भारतीय सबसे ज्यादा अमीर जातीय समुदायों में से एक है। सभी प्रवासी भारतीयों की औसत वार्षिक आय लगभग 89 हजार डॉलर है जो कि अमेरिकी नागरिकों की औसत वार्षिक आय 50 हजार डॉलर से अधिक है। भारतीय प्रवासी अमेरिका में 50: किफायती लॉज और 35: होटलों के मालिक है, जिसका बाजार मूल्य लगभग 40 बिलियन डॉलर है।

राजनीति में भागीदारी

नवंबर 2016 में 5 भारतीय अमेरिकी उम्मीदवारों रो खन्ना, एमी बोरा, राजा कृष्णमूर्ति, प्रमिला जयपाल और कमला हैरिस को अमेरिकी कांग्रेस में चुना गया, ऐसा करके उन्होंने एक नया इतिहास गढ़ा, जबकि एमी बोरा को दूसरी बार चुना गया था। 2016 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनावों में जीत हासिल करने के बाद डोनाल्ड ट्रंप ने उनका धन्यवाद करते हुए हिन्दुओं की प्रशंसा करके भारतीय अमेरिकी लोगों की राजनीतिक भागीदारी पर प्रकाश डाला। अक्तूबर 2021 में अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा था– आज हम किसी भी क्षेत्र में भारतीयों को नजर अंदाज नहीं कर सकते। इसमें राजनीति भी शामिल है। कमला हैरिस, निक्की हैली और राजीव शाह को आज कौन नहीं जानता। बहुत मुमकिन है कि अमेरिका का अगला राष्ट्रपति भारतीय मूल का ही हो। अमेरिका में प्रेसिडेंट जो बाइडेन के प्रशासन में 80 से ज्यादा भारतवंशी अहम पदों पर तैनात है। भारत और अमेरिका के बीच सिविल न्यूक्लियर डील के पीछे प्रवासी भारतीयों का महत्वपूर्ण योगदान था। उन्होंने इसके लिए तगड़ी लॉबिइंग की थी। ये स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि अमेरिकी राजनीति एक रुपांतरण से गुजर रही हैं, जहां भारतीय मूल के अधिक से अधिक लोग अपनी कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प से राजनीतिक ऊंचाइयों को छू रहे हैं।

राष्ट्रीय छवि

1970 तक अमेरिका में भारत को एक पिछड़ा देश माना जाता था। अब आईटी, वर्ल्ड फॉर्मेसी और डिजिटल करेंसी के मामले में भारत दुनिया का लीडर है। दुनिया की पांचवी बड़ी इकॉनोमी है। इसमें प्रवासी भारतीयों का भी अहम् योगदान है। इससे देश की राष्ट्रीय छवि बहुत बेहतर हुई है।

अमेरिका में भारत की ताकत

माइक्रोसॉफ्ट	34%
वैज्ञानिक	12%
जेरॉक्स	13%
नासा वैज्ञानिक	36%
आई.बी.एम. कर्मी	28%
डॉक्टर्स	38%

द्विपक्षीय संबंधो को आकार देने में भारतीय प्रवासियों की भूमिका

अमेरिका में भारतीय प्रवासी दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधो को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है।

- एक तरफ भारतीय अमेरिकी लोग अमेरिकी चुनावी राजनीति में एक महत्वपूर्ण वोट बैंक के रूप में सामने आए है, दूसरा वे अत्यधिक शिक्षित और धनवान भी है। जनसंख्या में वृद्धि और आर्थिक शक्ति में हिस्सेदारी के साथ भारतीय अमेरिकी पैरवी का ध्यान भारत की समस्याओं की ओर झुक गया है। उदाहरण के लिए, अप्रवासन कानून के संबंध में भारतीय प्रवासियों ने अमेरिका की 1965 की अप्रवासन नीति में भारतीयों के लिए अप्रवासन कानूनों के पक्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- नेशनल फेडरेशन आफ इंडियन अमेरिकन एसोसिएशन द्वारा की गई पैरवी के प्रयासों कारण ही भारत पर प्रतिबंध लगाने की अमेरिकी नीति को निष्क्रिय किया जा सका। परिणामस्वरूप, एन.एस.जी द्वारा भारत पर लगाए गए प्रतिबंध (1998 के परमाणु प्रसार के बाद) को अमेरिका की सिफारिश पर हटा दिया गया था।
- इसके अलावा, अमेरिका में भारत की सॉफ्ट पावर का लक्ष्य सामरिक प्रकृति का है। भारतीय अमेरिकी दबाव और प्रचार जैसे तरीकों से अमेरिकी सरकार के अधिकारियों को अधिक अनुकूल और संवेदनशील बनाने में मदद करवा रहे है। संयुक्त राज्य अमेरिका से आने वाला एफडीआई पर्याप्त नहीं है और संभावित अपेक्षा और आवश्यकता से कम है। इसलिए अमेरिका से पर्याप्त एफडीआई प्राप्त करने के लिए कुशल पैरवी महत्वपूर्ण है।
- एक अन्य क्षेत्र जिसमें भारतीय प्रवासियों ने भारत की सहायता की है, वो है "विदेशी शिक्षा प्रदाता विधेयक 2010" के तहत शैक्षिक भेदभाव से उभरना, जिसे भारत के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी ने अनुमोदन प्रदान किया था। भारतीय प्रवासियों की पैरवी अमेरिकी सरकार को भारत में अमेरिकी विश्वविद्यालय परिसरों की स्थापना द्वारा सहयोग करने के लिए राजी कर सकती है। भारत की घरेलू और वैश्विक स्तर पर विविध आकांक्षाएं है जिनके लिए विशाल विदेशी पूंजी और अभिस्वीकृति की बहुत आवश्यकता है।

निष्कर्ष

1960 और 1970 के दशक में पहली पीढ़ी के एक छोटे एवं अराजनैतिक समूह के अप्रवासियों को लेकर 21वीं शताब्दी में अमेरिकी समाज का एक आर्थिक और सामाजिक रुप से सुस्थापित हिस्सा बनने तक भारतीय प्रवासियों का अभूतपूर्व ढंग से विकास हुआ है। भारतीय अमेरिकी सबसे धनी, सबसे शिक्षित और अमेरिका में कानून का पालन करने वाला जातीय समुदाय है। यह समुदाय अत्यधिक संगठित भी है। एक अच्छा अनुपात भारत का नियमित दौरा करता है और कई लोग भारत में धन वापिस भेजते है। भारतीय अमेरिकियों ने कई वकालत संगठनों और राजनीतिक कार्रवाई समितियों की स्थापना की है जिन्होंने

भारत के लिए महत्वपूर्ण मुद्दों की वकालत करने में मौलिक काम किया है। जिन लोगों को कभी तुच्छ माना जाता था, अब उन्हें संयुक्त राज्य में बढ़ती सॉफ्ट पावर के लिए जाना जाता है।

2018 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था– हम ब्रेन ड्रेन को अब ब्रेन गेन में बदलने के रास्ते पर चल रहे है। हम चाहते है कि दूसरे देशों में रह रहे भारतीयों को 'अधिकतम सुविधा' और 'न्यूनतम असुविधा' मिले। इससे देश को फायदा होगा इसका असर भी देखने को मिला। वक्त के साथ प्रवासी भारतीय हर तरह से मजबूत होते चले गए। 27 जनवरी 2022 को भारत सरकार द्वारा तीन प्रख्यात भारतीय अमेरिकियों (भारतीय व्यजंनों को लोकप्रिय बनाने वाली मधु जाफरी और प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में नेतृत्व करने वाले सत्य नाडेला तथा सुंदर पिचाई) को पद्मभूषण नागरिक पुरस्कार देने की घोषणा के एक दिन बाद बुधवार को अमेरिका में भारत के तरणजीत सिंह संधू ने कहा कि भारतीय मूल के अमेरिकी प्रवासियों ने दोनों देशों के संबंधों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

संदर्भ सूची

1. जोसेफ एस नाइ जूनियर, वैश्विक राजनीति सार्वजनिक मामलों में सफलता की कुंजी सॉफ्ट पावर, 2005
2. द डिप्लोमेट, भारत के लिए अगला कदम क्या– यू.एस.संबंध ?,10 जुलाई 2018
3. भारतीय प्रवासीः जनजातीय और प्रवासी पहचान, सी.ए.आर. आई. एम. भारत, 2013
4. संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में भारतीय प्रवासी, शोध गंगा
5. कामनी कुमारी, सॉफ्ट पावर के रूप में प्रवासीः यू.एस में भारतीय प्रवासियों की एक केस स्टडी, 2017
6. उमा पुरूषोत्तम, यू.एस निर्वाचन, भारतीय प्रवासियों की भूमिका का स्पष्टीकरण, 2015
7. मधुलिका बनिवाल,भारत–अमेरिका संबंधों में भारतीय प्रवासियों का योगदान,26 अक्तूबर 2018
8. सहाय अंजलि, संयुक्त राज्य
9. अमेरिका में भारतीय प्रवासीः प्रतिभा पलायन या लाभ? लानहम
10. लेक्सिंगटन बुक्स, 2009
11. नवभारत टाइम्स, भारत–अमेरिका संबंधों का महत्वपूर्ण स्तंभ है प्रवासी समुदायः भारतीय राजदूत, 27 जनवरी 2022
12. दैनिक जागरण,भारत–अमेरिका संबंधो में प्रवासी भारतीयों की वजह से बढ़ी घनिष्ठता, हर क्षेत्र में अहम है योगदान, 21 अप्रैल 2022